

जब आत्मा हो संतुष्ट, तभी भाग्य है परफेक्ट



डॉ. अनंजी महाराज

आज के दौर में 'परफेक्ट भाग्य' की परिभाषा लगभग पूरी तरह बाहरी उपलब्धियों से जुड़ी हुई है। स्वस्थ शरीर, सफल करियर, आदर्श परिवार, सुंदर घर और आर्थिक सुरक्षा इन सबको हम सौभाग्य का पैमाना मानते हैं। किंतु प्रश्न यह है कि क्या इन सबके होते हुए भी मन की अशांति हमें भाग्यशाली महसूस करने देती है? यदि भीतर संतोष नहीं, तो बाहर की परिपूर्णता भी अधूरी है।

वर्तमान समय अनिश्चितताओं से भरा है। परिस्थितियाँ पल-पल बदलती हैं। कभी स्वास्थ्य संकट, कभी आर्थिक उतार-चढ़ाव, कभी सामाजिक दबाव, जीवन का बाहरी परिदृश्य स्थिर नहीं है। ऐसे में यदि हम भाग्य को बाहरी कारकों से जोड़ेंगे, तो हमारी संतुष्टि भी अस्थायी ही रहेगी। बाहरी जगत हमारे पूर्ण नियंत्रण में नहीं, पर हमारा मन, हमारा दृष्टिकोण और हमारी प्रतिक्रिया ये पूर्णतः हमारे हाथ में हैं।

समस्या यह नहीं कि हम बेहतर जीवन चाहते हैं; समस्या यह है कि हमने 'बेहतर' को केवल भौतिक मानकों से परिभाषित कर दिया है। हम मान बैठते हैं कि सबकुछ परफेक्ट हो जाए, तब हम खुश रहेंगे। किंतु अनुभव बताता है कि जिनके पास सबकुछ है वे भी अक्सर और चाहिए की दौड़ में लगे रहते हैं। साधनों की प्रचुरता के बावजूद संतोष का अभाव उन्हें भीतर से खाली रखता है। इसके विपरित, सीमित संसाधनों के साथ भी कुछ लोग संतुष्ट और शांत दिखाई देते हैं। अंतर बाहरी वस्तुओं में नहीं, भीतरी स्थिति में है।

आज तुलना हमारी सबसे बड़ी मानसिक चुनौति बन चुकी है। सामाजिक मंचों और आभासी संसार में दूसरों के जीवन का चमकदार पक्ष देखकर हम अपने जीवन को कमतर आँकने लगते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि हर व्यक्ति अपने संघर्षों से गुजर रहा है। तुलना का यह भाव हमारी आंतरिक ऊर्जा को क्षीण करता है और हमें कृतज्ञता से दूर ले जाता है।

यहाँ 'शुक्रिया' का संस्कार महत्वपूर्ण हो जाता है। कृतज्ञता परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती; वह एक दृष्टिकोण है। यदि हम दिन की शुरुआत धन्यवाद से करें - अपने जीवन, अपने शरीर, अपने सम्बन्धों के प्रति, तो हमारा देखने का चरम बदल जाता है। शिकायत का भाव परफेक्ट परिस्थितियों में भी कमी खोज लेता है, जबकि कृतज्ञता अपूर्णता में भी सौंदर्य देख लेती है। इसके अतिरिक्त, जो लोग हमारे जीवन में चुनौति बनकर आते हैं, वे भी हमारे विकास का माध्यम हो सकते हैं। आलोचना, विरोध या असहमति हमारे भीतर की सहनशक्ति, धैर्य और विनम्रता को परखते हैं। यदि हम हर प्रतिक्रिया में अपनी शांति खो देते हैं, तो हम अपनी ही ऊर्जा गंवा बैठते हैं। किंतु यदि हम संतुलन बनाए रखें तो वही परिस्थितियाँ हमारे आंतरिक बल को सुदृढ़ करती हैं।

अतः समय आ गया है कि हम भाग्य की परिभाषा बदलें। परफेक्ट भाग्य का अर्थ यह नहीं कि सबकुछ हमारे अनुरूप हो; बल्कि यह कि हम हर परिस्थिति में संतुलित, संतुष्ट और सकारात्मक बने रहें। बाहरी संसार परिवर्तनशील है, पर मन को स्थिर बनाना संभव है। जब दृष्टिकोण बदलता है, तब जीवन की चुनौतियाँ भी अवसर में परिवर्तित हो जाती हैं। शायद सच्चा सौभाग्य इसी में है - लेने की नहीं देने की भावना में; शिकायत में नहीं, शुक्रिया में; तुलना में नहीं, आत्मचिंतन में। जब मन भरपूर होगा, तभी जीवन सच्चे अर्थों में परफेक्ट कहलाएगा।

तीन बार ओमशान्ति कहने से साग ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। बाप भी याद आ गया, दादा भी और तीसरा ड्रामा भी। इस ड्रामा के ज्ञान के बिना भी हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं, अचल, अडोल नहीं रह सकते हैं। कभी कोई भी ऐसा विघ्न आता है, पता नहीं मेरा आगे क्या पाट है? मैं चल सकूँगी या नहीं चल सकूँगी...। अभी तो मैजिस्ट्री को निश्चय हो गया है कि हम ही थे, हम ही हैं और हम ही होंगे, यह पक्का है ना! जब संगठन में रहते हैं तो कई छोटी-मोटी बातें तो आती रहेंगी, कोई भी बात आवे, माया का काम है हिलाना। लेकिन मम्मा कहती थी, माया का काम देख करके आप अपना काम क्यों भूल जाते हो? हमारा काम क्या है? हिलाना या माया को हिलाना? अभी हम सारे ड्रामा को जानते हैं, कभी भी कोई दिलशिकस्त हो तो ड्रामा को याद करें मैं थी, मैं हूँ और मैं हो बनूँगी, इसलिए बाबा ड्रामा को भी याद दिलाता है। कोई भी हलचल आवे तो हलचल

है ना। देवता बनना है तो अपने संस्कारों के ऊपर ध्यान दो। तो यह सब बातें जो हैं वो हमारी परिवर्तन होनी चाहिए। तो संस्कार परिवर्तन के ऊपर आप सबका अटेंशन है? बाबा ने कहा है फरिश्ते जैसे संस्कार, देवता जैसे संस्कार हमको धारण करने हैं, तो हमारी



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ड्रामा के राज को यथार्थ समझने से हलचल में नहीं आयेगे

में नहीं आना लेकिन ड्रामा के राज को समझ करके अचल हो जाना।

हम देवता हैं, यह पक्का है ना आपको? यह भूलना नहीं कि मैं देवता की आत्मा थी, अब चक्कर लगके फिर वही बन रहे हैं, मनुष्य से देवता। तो इस नशे में रहने से मैं आत्मा हूँ, मैं फरिश्ता हूँ और फिर देवता हूँ। जो बाबा सिखाते हैं, बीच-बीच में उसका अभ्यास करते रहो तो कभी कोई भी खिंट-खिंट हमारे सामने आएगी तो वह अभ्यास हमको हिलाएगा नहीं। अभी संस्कार का टक्कर जब होता है तो अवस्था बदल जाती

अवस्था सदा दिलखुश रहे और खुशी ही सबको बांटते रहें। टक्कर को भी खुशी में बदल दो, जिससे टक्कर हो उसे भी योग की किरणें दे करके बदलना है।

दादी जी के जीवन की विशेषता एक लाइन में सुनाएँ तो मैंने देखा कि बाबा का कहना और दादी का करना क्योंकि दादी ने बचपन से बाबा के मुख से जो निकला वो प्रैक्टिकल किया है। ड्रामा अनुसार चांस भी मिला है। समय प्रति समय जो बाबा के डायरेक्शन निकले, उस अनुसार दादी ने वह सेवा की है, यह दादी की स्पेशल विशेषता रही है।

बाबा कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को अपने समान विदेशी बनाने। दूसरा - बच्चे मैपन को त्यागो। जहाँ मैं है उसे छोड़ बाबा-बाबा करो। हम निर्मित हैं। तीसरा - अपने कैरेक्टर पर ध्यान दो क्योंकि तुम्हें देवता बन स्वर्ग का मालिक बनना है। तो हर एक चेक करें कि हमारे मन में कहीं तक शुद्ध संकल्प चलते हैं? कहीं तक हम मन का मालिक राजा बन, मन वजीर को बाकायदे शुद्ध संकल्पों में, मनन चिंतन में रखते हैं? या मैं-मैं के देह अभिमान में व्यर्थ संकल्प चलते हैं? स्व के बदले पर को (दूसरे को) देखते, सोचते, संकल्प



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

लाइट बन लाइट की दुनिया में रहने का अभ्यास करो तो मैपन स्वतः समाप्त हो जाएगा

करते या ज्ञान सागर बाप के ज्ञान के खजाने का मनन करते हैं? मन के संकल्प सर्व प्राप्ति में मगन रहते हैं? सर्व प्राप्ति के खजानों को पाकर अपार खुशियाँ में रहते हैं?

मन के संकल्प पॉजिटिव चलते या निगेटिव चलते? हर प्रकार के निगेटिव थॉट्स को परिवर्तन कर पॉजिटिव सोचो। जितना-जितना पॉजिटिव सोचेंगे उतना मन की शुद्धि होती जाएगी, एकाग्रता बढ़ती जाएगी। पॉजिटिव में भी स्व का चिंतन विशेष करना है। पर को देखने के बदली स्व को देखो। आप यह कभी नहीं सोचेंगे कि मैं सेवाधारी हूँ, परन्तु आप ईश्वरीय सेवाधारी है। तो हमारा हर संकल्प, हर बोल, हर कदम सेवा में है या ईश्वरीय सेवा में है? यदि मैं सेवा में हूँ तो भी कहीं देह अभिमान या मैपन आ जाता है। लेकिन मैं हूँ ही ईश्वरीय सेवा पर तो मेरा जो भी खता है वह बाबा की दरबार में जमा है। तो हर एक अपना ईश्वरीय खाता चेक करो।

बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए हमें स्वयं में क्या धारणा करनी है? कई बार बाबा ने मुरली में कहा है तुम्हारा संकल्प, बोल, तुम्हारा चेहरा ही बाप का साक्षत्कार कराएगा। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी बाबा ने हम सबको

दी है कि तुम्हें बाप को प्रत्यक्ष करना है, उसके लिए खुद को देखो कि मैं बाप समान सम्पन्न बना हूँ? बाप समान सम्पन्न बनना माना ही सर्व विघ्नों से ऊपर निर्विघ्न अवस्था बनाना। सम्पन्न बनने का अर्थ है कि सर्व कमियों-कमजोरियों को समाप्त करना है। जैसे पढ़ाई में परीक्षा के दिन होते तो होशियार स्टूडेंट का लक्ष्य होता है कि मुझे फर्स्ट डिवीजन में पास होना है, पास विद ऑनर बनना है। जब हम पास विद ऑनर्स हो तब तो धर्मराज की सजाओं से मुक्त हो। धर्मराज बाबा हमारा स्वागत करें। बाबा हमें अपना भुजाओं में वेलकम करें। बाबा कहे ओ मेरे समान बच्चे! आओ।

हर एक अपने आपको इतनी ऊँची दृष्टि से देखें कि बरोबर हम ऊपर में बाबा के साथ फरिश्तों की दुनिया में उड़ रहे हैं। नीचे में आकर, व्यक्तियों को देख व्यक्तित्व में अपना समय, शक्ति खर्च नहीं करो। यह बहुत बड़ी सूक्ष्म स्थिति बनाने की चैलेंज बाबा ने हमें दी है। कोई भी बात व्यक्त में आकर करे तो जैसे पत्थर तोड़ेंगे लेकिन ऊपर से उड़ जाओ तो सभी बातें सहज ही क्रॉस हो जायेंगी माना निवारण हो जायेंगी। जितना भी टाइम साइलेन्स में बैठो उतना समय गहरा अनुभव करो कि हम इस देह से परे उड़ गये हैं। उड़ना माना विदेशी बन फरिश्तों की दुनिया में पहुँच जाना। जितना लाइट बन लाइट की दुनिया में, फरिश्ते स्थिति में रहने का अभ्यास करेंगे उतना ऑटोमैटिक मैपन

निकल जायेगा। और जितना यह अभ्यास करेंगे उतना जो भी कोई कमजोरी होगी, अपवित्रता के संस्कार आदि जो भी कुछ है वह सब खत्म हो जायेंगे। अभी सबको वही शुभ संकल्प करना है कि 1. मुझे बाबा के समान सम्पन्न फरिश्ता बनना है। 2. हमें इस विश्व की स्टेज पर अपने चलन, चेहरे, संकल्प, बोल से बाबा को प्रत्यक्ष करना है। हमारे वायब्रेशन ऐसे हों जो सभी कहें कि आप धन्य हैं। आप लोगों को भगवान ने ही पढ़ाया है और पढ़ा भी रहा है। यह संस्था देहधारियों की नहीं है, यह संस्था गुरु-चेलों की नहीं है परन्तु सभी ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ परमात्म से पढ़ाई पढ़के परमात्म प्यार में लवलीन होने वाले हैं। हमें यह बहुत नशा है कि हम इस संगम पर कितने लकड़ों हैं, कितने महान भाग्यवान हैं जो वरदाता बाप ने हमें सर्व वरदानों से भरपूर किया है। लोग कृपा मांगते, हमें तो पल-पल कदम-कदम पर बाबा वरदानों से भरपूर कर रहा है। तो क्या यह दिल में नहीं आता कि हम ऐसा भरपूर बन, परम आनंद का अनुभव करें। हम प्रभु को अर्पण हैं। कोई पूछे तो हम ज़ाती पर हाथ रखकर कहते हैं कि हमने परमात्मा को पाया है।

जो संतुष्ट हैं वे ही बाबा के कार्य में मददगार बनते

फालतु व्यर्थ ख्याल आपकी नहीं आते, इसे हम स्वयं पैदा करते हैं। एक व्यर्थ आया तो औरों को साथ ले आता है, जो सारी शक्ति छीन लेता है। बाबा से कनेक्शन टूट जाता है। फिर मुख से बाबा-बाबा भी नहीं कहते हैं, इतना तो माया गला घोट देती है इसलिए बाबा कहते हैं- खबरदार रहो। वाह बाबा! वाह ड्रामा! वाह रे मैं! ऐसा सच्चा पुरुषार्थ, तीव्र पुरुषार्थ, कन्टिन्यु होता रहे, अपनी स्थिति ऊँची एकरस बनाना - यह भी एक ज्ञान है। सदा साथ का अनुभव बहुत सुखी रखता है। वो फिर सदा अन्तर्मुखी रहता है। अगर मैं यहाँ सन्तुष्ट रहकर सबको सन्तुष्ट नहीं कर सकती हूँ, तो मैं बाबा की मददगार नहीं हूँ। सेमिस्टिव नेचर वाला कभी सुखी नहीं रह सकता है, न ही कभी किसी को सुख देके सन्तुष्ट कर सकता है। तो सेन्सीबुल बन अपनी नेचर को बड़ा मीठा बनाओ। अपनी धारणा में मजबूत रहो जिससे कोई हमसे डिस्टर्ब न हो, न मैं कभी किसी से डिस्टर्ब हो जाऊँ।

स्व-चिंतन और ईश्वरीय चिंतन में रहो। जैसा कर्म हम करते हैं और भी देखके वही करते हैं। तो जितना ज्ञान अति सूक्ष्म है, उतनी सूक्ष्म चेंजिंग और चेंजिंग चाहिए। चेक किया चेंज हो गया, ऐसा ज्ञान कहता है।

ज्ञान जो मिला वो जीवन में आया तो बाबा कहता है वाह बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह! अच्छा।

अन्दर कोई भी लीकेज है तो योग लग नहीं सकता।

शक्ति मिल नहीं सकती। आत्मा, परमात्म शक्ति खींचती रहे उसी आधार से आत्मा प्रकृति को चलाती रहे क्योंकि आत्मा और शरीर दोनों को सतोप्रधान बनाना है। तो जैसे हमारा बाबा है, वैसे हमको करना है। किसी को देखकर कुछ नहीं करने का है। जो बाबा ने किया है वही करना है। ऐसा हमको बाबा का सपुत, लाइला, सिक्कीला बच्चा बनना है। जिसको जैसा बनना है वैसा ही चिंतन करना है। सारा दिन अपने चिंतन और भावना को देखो, दृष्टि में देखो एक बाबा हो बसता है! जैसे चित्रकार की बुद्धि में एक्ज्यूट मूर्ति बनाने का रहता, वैसे बाबा हमारी मूर्ति बना रहा है। हर बात में फॉरगिव करना, फॉरगोट करना यह पुण्य कर्म है। किसी की कमी को अपने अन्दर रखेंगे तो हमारे अन्दर क्या चलता है वो स्पष्ट दिखाई देगा। लेकिन सच्चा पुरुषार्थ जो होता है वे अपनी कमी को निकालने की कोशिश करेंगे, उसका वर्णन नहीं करेंगे। दे दान छूटे ग्रहण। जिसमें जो कमी हो वो ग्रहचारी दूर हो जाये। अपनी स्थिति में कोई विघ्न न पड़े। कोई मनमत्त पर चलता है, कुछ भी करता है... तो भी बाबा कभी यह नहीं कहेंगे कि इसको यह सजा मिलनी चाहिए। वो माता, पिता, टीचर, सखा का पाट बनाता है। सतगुरु रूप से श्रमपत व डायरेक्शन भी देता है और सच्चा बच्चा, अच्छा बच्चा भी कहता है। अगर कोई भूल करके छिपाता है तो भी बाबा समझाएगा पर यह कभी नहीं कहेंगे। इसको सजा मिले। बाबा कहेंगे यह मेरा काम नहीं है। माँ का काम, बाप का काम, शिक्षक का काम, सतगुरु का काम करता है, पर हर एक के कर्म के हिसाब-किताब में खुद नहीं जाता है। अपने को प्रो रखता है। शिवबाबा तो समय पर आके अपना पाट बजाके जाता है। बच्चों को नॉलेज देता है जो जितनी धारणा करते हैं वो उतना सुखर जाते हैं। हाँ, याद करते हैं तो उनके पाप नाश होते हैं। कर्मों की गृहगति समझते हैं, परन्तु अच्छी तरह से ध्यान रखें कि ऐसा कोई भी काम नहीं करना जिससे सजा खानी पड़े। ध्यान से जो अमृतवेला करता है, मुरली सुनता है, बाबा उसमें बल भरता है।

याद माना क्या? हमको एक बाबा के सिवाए और कुछ याद न आये, हमारी याद ऐसी हो जो अवस्था परिपक्व हो। बाबा को याद करने से अवस्था मजबूत होती है। बात खत्म हो जाती है। चिंतन चलता ही नहीं है।



राजयोगिनी दादी अनंजी जी